Pro

Chapter 18

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

לְֽתַאֲוָה	יְבַקֵּשׁ	נִפְרָד	בְּכָל־	תּוּשִׁיָּה	יִתְגַּלָּע׃
इच्छा-के-लिए	खोजता-है	अलग-हुआ	सब-	बुद्धि-में	झगड़ता-है
H8378	H1245	H6504	H3605	H8454	H1566

> मित्रता रहित व्यक्ति अपने स्वार्थ साधता है। वह समझदारी की बातें नकार देता है।

2

לֹא־	יַחְפֹּץ	כְּסִיל	בִּתְבוּנָה	כִּ֝י	אִם־	בְּהִתְגַּלּוֹת	לִבּוֹ׃
नहीं-	प्रसन्न-होता	मूर्ख	समझ-में	क्योंकि-	जब-तक-	प्रकट-न-हो	हृदय-उसका
H3808		H3684	H8394			H1540	

> मूर्ख सुख वह शेखचिल्ली बनने में लेता है। सोचता नहीं है कभी वे पूर्ण होंगी या नहीं। सुख उसे समझदारी के बातें नहीं देती।

3

בְּבוֹא־	רָשָׁע	בָּא	גַם־	בּוּז	וְעִם־	קָלוֹן	חֶרְפָּה׃
आने-पर-	दुष्ट-के	आता-है	भी-	तिरस्कार	और-साथ-	अपमान-के	निंदा
H0935	H7563	H0935	H1571	H0937		H7036	H2781

> दुष्टता के साथ—साथ घृणा भी आती है और निन्दा के साथ अपमान।

4

מַיִם	עֲמֻקִּים	דִּבְרֵי	פִי־	אִישׁ	נַחַל	נֹבֵעַ	מְקוֹר	חָכְמָה׃
जल	गहरा	वचन	मुख-के-	मनुष्य-के	नदी	बहती	स्रोत	बुद्धि-का
H4325	H6013	H1697	H6310	H0376		H5042	H4726	H2451

> बुद्धिमान के शब्द गहरे जल से होते हैं, वे बुद्धि के स्रोत से उछलते हुए आते हैं।

5

שְׂאֵת	פְּנֵי־	רָשָׁע	לֹא־	טוֹב	לְהַטּוֹת	צַדִּיק	בַּמִּשְׁפָּט׃
उठाना	मुख-	दुष्ट-का	नहीं-	अच्छा	झुकाना	धर्मी-को	न्याय-में
H5375	H6440	H7563	H3808		H5186	H6662	H4941

> दुष्ट जन का पक्ष लेना और निर्दोष को न्याय से वंचित रखना उचित नहीं होता।

6

שִׂפְתֵי	כְסִיל	יָבֹאוּ	בְרִיב	וּפִיו	לְמַהֲלֻמוֹת	יִקְרָא׃
होंठ	मूर्ख-के	लाते-हैं	झगड़ा	और-मुख-उसका	मार-के-लिए	पुकारता-है
H8193	H3684	H0935	H7379	H6310	H4112	H7121

> मूर्ख की वाणी झंझटों को जन्म देती है और उसका मुख झगड़ों को न्योता देता है।

7

פִּי־	כְסִיל	מְחִתָּה־	לוֹ	וּשְׂפָתָיו	מוֹקֵשׁ	נַפְשׁוֹ׃
मुख-	मूर्ख-का	विनाश-	उसके-लिए	और-होंठ-उसके	फंदा	प्राण-उसके-लिए
H6310	H3684	H4288		H8193	H4170	H5315

> मूर्ख का मुख उसका काम को बिगाड़ देता है और उसके अपने ही होठों के जाल में उसका प्राण फँस जाता है।

8

דִּבְרֵי	נִרְגָּן	כְּמִתְלַהֲמִים	וְהֵם	יָרְדוּ	חַדְרֵי־	בָטֶן׃
वचन	चुगलखोर-के	स्वादिष्ट-जैसे	और-वे	उतरते-हैं	कोठरियों-में-	पेट-की
H1697	H5372	H3859	H1992	H3381	H2315	H0990

> लोग हमेशा कानाफूसी करना चाहते हैं, यह उत्तम भोजन के समान है जो पेट के भीतर उतरता चला जाता है।

9

גַּם	מִתְרַפֶּה	בִמְלַאכְתּוֹ	אָח	הוּא	לְבַעַל	מַשְׁחִית׃
भी	शिथिल	काम-में-अपने	भाई	वह	स्वामी-का	नाश-करनेवाले-का
H1571	H7503	H4399	H0251	H1931	H1167	H7843

> जो अपना काम मंद गति से करता है, वह उसका भाई है, जो विनाश करता है।

10

מִגְדַּל־	עֹז	שֵׁם	יְהוָה	בּוֹ־	יָרוּץ	צַדִּיק	וְנִשְׂגָּב׃
गढ़–	बलवान	नाम	यहोवा–का	उसमें–	दौड़ता–है	धर्मी	और–सुरक्षित–होता–है
H4026	H5797	H8034	H3068		H7323	H6662	H7682

यहोवा का नाम एकगढ़ सुदृढ़ है। उस ओर धर्मी बढ़ जाते हैं और सुरक्षित रहते हैं।

11

הוֹן	עָשִׁיר	קִרְיַת	עֻזּוֹ	וּכְחוֹמָה	נִשְׂגָּבָה	בְּמַשְׂכִּיתוֹ׃
धन	धनवान–का	नगर	बल–उसका	और–दीवार–जैसे	ऊंची	कल्पना–में–उसकी
H1952	H6223	H7151	H5797	H2346	H7682	H4906

धनिक समझते हैं कि उनका धन उन्हें बचा लेगा— वह समझते हैं कि वह एक सुरक्षित किला है।

12

לִפְנֵי־	שֶׁבֶר	יִגְבַּהּ	לֵב־	אִישׁ	וְלִפְנֵי	כָבוֹד	עֲנָוָה׃
पहले–	विनाश–के	ऊंचा–होता–है	हृदय–	मनुष्य–का	और–पहले	आदर–के	नम्रता
H6440	H7667	H1361		H0376	H6440	H3519	H6038

पतन से पहले मन अहंकारी बन जाता, किन्तु सम्मान से पूर्व विनम्रता आती है।

13

מֵשִׁיב	דָּבָר	בְּטֶרֶם	יִשְׁמָע	אִוֶּלֶת	הִיא־	לוֹ	וּכְלִמָּה׃
उत्तर–देनेवाला	बात–का	पहले–	सुनने–से	मूर्खता	वह–	उसके–लिए	और–लज्जा
H7725	H1697	H2962	H8085	H0200	H1931		H3639

बात को बिना सुने ही, जो उत्तर में बोल पड़ता है, वह उसकी मूर्खता और उसका अपयश है।

14

רוּחַ־	אִישׁ	יְכַלְכֵּל	מַחֲלֵהוּ	וְרוּחַ	נְכֵאָה	מִי	יִשָּׂאֶנָּה׃
आत्मा–	मनुष्य–की	सहती–है	रोग–उसका	परंतु–आत्मा	टूटी–हुई	कौन	उठा–सकता–है
H7307	H0376	H3557		H7307		H4310	H5375

मनुष्य का मन उसे व्याधि में थामें रखता किन्तु टूटे मन को भला कोई कैसे थामे।

15

לֵב	נָבוֹן	יִקְנֶה־	דָּעַת	וְאֹזֶן	חֲכָמִים	תְּבַקֶּשׁ־	דָּעַת׃
हृदय	समझदार	प्राप्त–करता–है–	ज्ञान	और–कान	बुद्धिमानों–के	खोजते–हैं–	ज्ञान
	H0995	H7069	H1847	H0241	H2450	H1245	H1847

बुद्धिमान का मन ज्ञान को प्राप्त करता है। बुद्धिमान के कान इसे खोज लेते हैं।

16

מַתָּן	אָדָם	יַרְחִיב	לוֹ	וְלִפְנֵי	גְדֹלִים	יַנְחֶנּוּ׃
भेंट	मनुष्य–की	विस्तृत–करती–है	उसके–लिए	और–सामने	बड़ों–के	ले–जाती–है
H4976	H0120	H7337		H6440		H5148

उपहार देने वाले का मार्ग उपहार खोलता है और उसे महापुरुषों के सामने पहुँचा देता।

17

צַדִּיק	הָרִאשׁוֹן	בְּרִיבוֹ	[יבא־]	(וּבָא־)	רֵעֵהוּ	וַחֲקָרוֹ׃
धर्मी	पहला	मुकदमे–में–अपने	[आता–है–]	(और–आता–है–)	पड़ोसी–उसका	और–जांचता–है
H6662	H7223	H7379	H0935	H0935	H7453	H2713

पहले जो बोलता है ठीक ही लगता है किन्तु बस तब तक ही जब तक दूसरा उससे प्रश्न नहीं करता है।

18

מִדְיָנִים	יַשְׁבִּית	הַגּוֹרָל	וּבֵין	עֲצוּמִים	יַפְרִיד׃
झगड़े	बंद–करता–है	चिट्ठी	और–बीच	बलवानों–के	अलग–करता–है
H4079		H1486	H0996	H6099	H6504

यदि दो शक्तिशाली आपस में झगड़ते हों, उत्तम हैं कि उनके झगड़े को पासे फेंक कर निपटाना।

19

אָח	נִפְשָׁע	מִקִּרְיַת־	עֹז	[ומדונים]	(וּמִדְיָנִים)	כִּבְרִיחַ	אַרְמוֹן׃
भाई	अपराधी	नगर–से–	बलवान	[और–झगड़े]	(और–झगड़े)	बेंड़े–जैसे	महल–के
H0251	H6586	H7151	H5797	H4066	H4066	H1280	H0759

किसी दृढ़ नगर को जीत लेने से भी रूठे हुए बन्धु को मनाना कठिन है, और आपसी झगड़े होते ऐसे जैसे गढ़ी के मुंदे द्वार होते हैं।

20

מִפְּרִי	פִי־	אִישׁ	תִּשְׂבַּע	בִּטְנוֹ	תְּבוּאַת	שְׂפָתָיו	יִשְׂבָּע׃
फल-से	मुख-के-	मनुष्य-के	तृप्त-होता-है	पेट-उसका	उपज-से	होंठों-के-उसके	संतुष्ट-होता-है
H6529	H6310	H0376	H7646	H0990	H8393	H8193	H7646

> मनुष्य का पेट उसके मुख के फल से ही भरता है, उसके होठों की खेती का प्रतिफल उसे मिला है।

21

מָוֶת	וְחַיִּים	בְּיַד־	לָשׁוֹן	וְאֹהֲבֶיהָ	יֹאכַל	פִּרְיָהּ׃
मृत्यु	और-जीवन	वश-में-	जीभ-के	और-प्रेमी-उसके	खाएंगे	फल-उसका
H4194		H3027	H3956	H0157	H0398	H6529

> वाणी जीवन, मृत्यु की शक्ति रखती है, और जो वाणी से प्रेम रखते है, वे उसका फल खाते हैं।

22

מָצָא	אִשָּׁה	מָצָא	טוֹב	וַיָּפֶק	רָצוֹן	מֵיְהוָה׃
पाता-है	पत्नी	पाता-है	भलाई	और-प्राप्त-करता-है	कृपा	यहोवा-से
H4672	H0802	H4672		H6329	H7522	H3068

> जिसको पत्नी मिली है, वह उत्तम पदार्थ पाया है। उसको यहोवा का अनुग्रह मिलता है।

23

תַּחֲנוּנִים	יְדַבֶּר־	רָשׁ	וְעָשִׁיר	יַעֲנֶה	עַזּוֹת׃
विनती	बोलता-है-	गरीब	परंतु-धनी	उत्तर-देता-है	कठोरता-से
H8469	H1696	H7326	H6223		H5794

> गरीब जन तो दया की मांग करता है, किन्तु धनी जन तो कठोर उत्तर देता है।

24

אִישׁ	רֵעִים	לְהִתְרֹעֵעַ	וְיֵשׁ	אֹהֵב	דָּבֵק	מֵאָח׃
मनुष्य	मित्रों-का	टूट-जाता-है	और-है	प्रेमी	चिपकता	भाई-से-अधिक
H0376	H7453		H3426	H0157	H1695	H0251

> कुछ मित्र ऐसे होते हैं जिनका साथ मन को भाता है किन्तु अपना घनिष्ठ मित्र भाई से भी उत्तम हो सकता है।